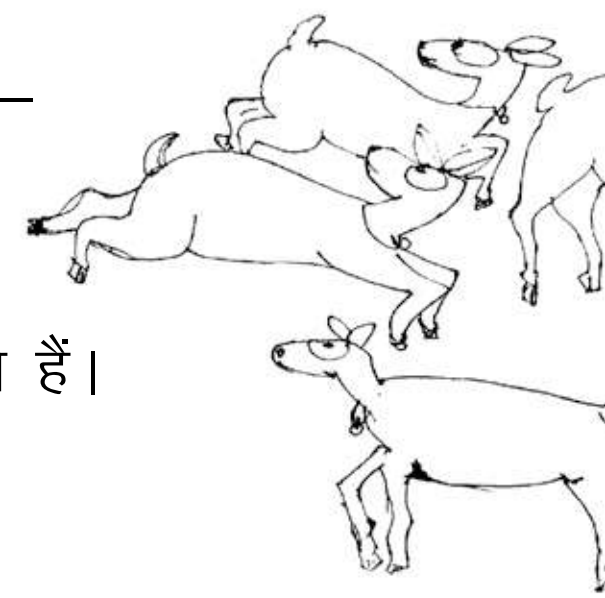
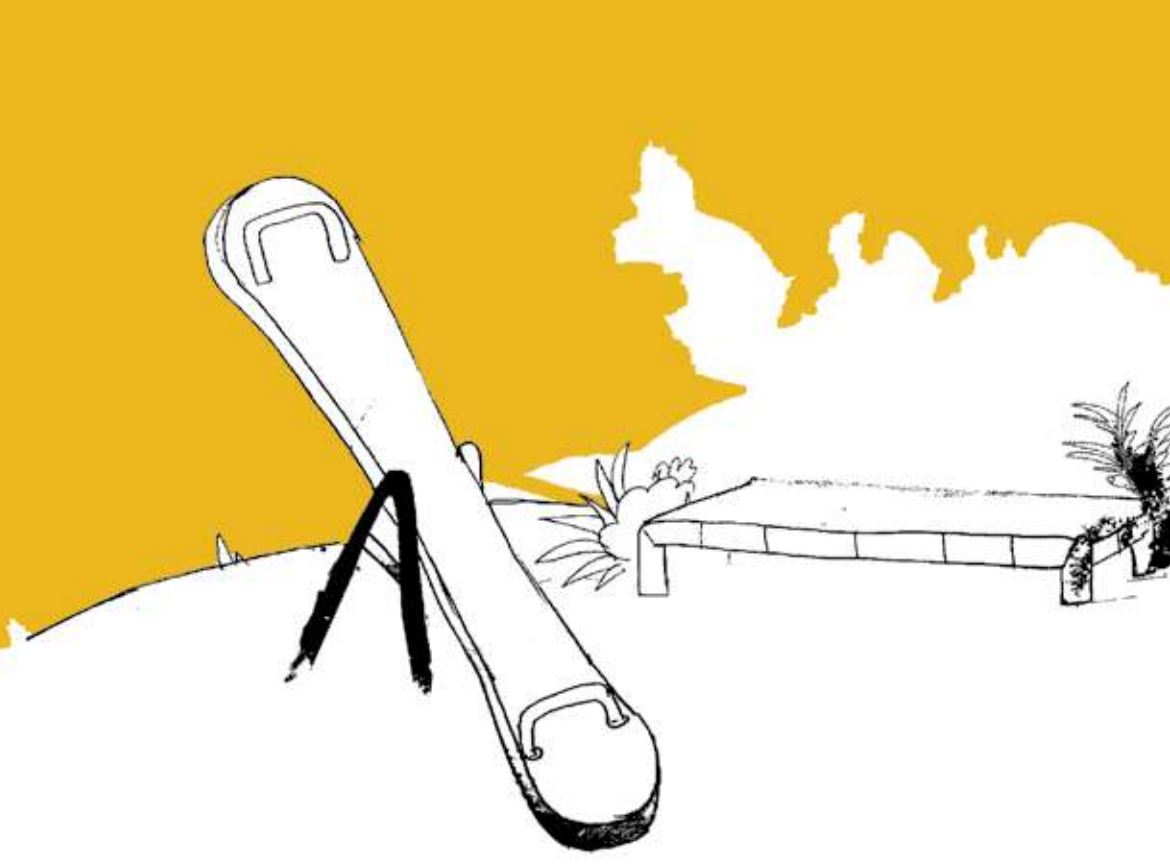




मैं उनकी गोदी में  
बैठकर हॉर्न बजाती हूँ —  
पॉम! पॉम!  
रास्ते की सब बकरियाँ  
और गायें दूर हट जाती हैं।





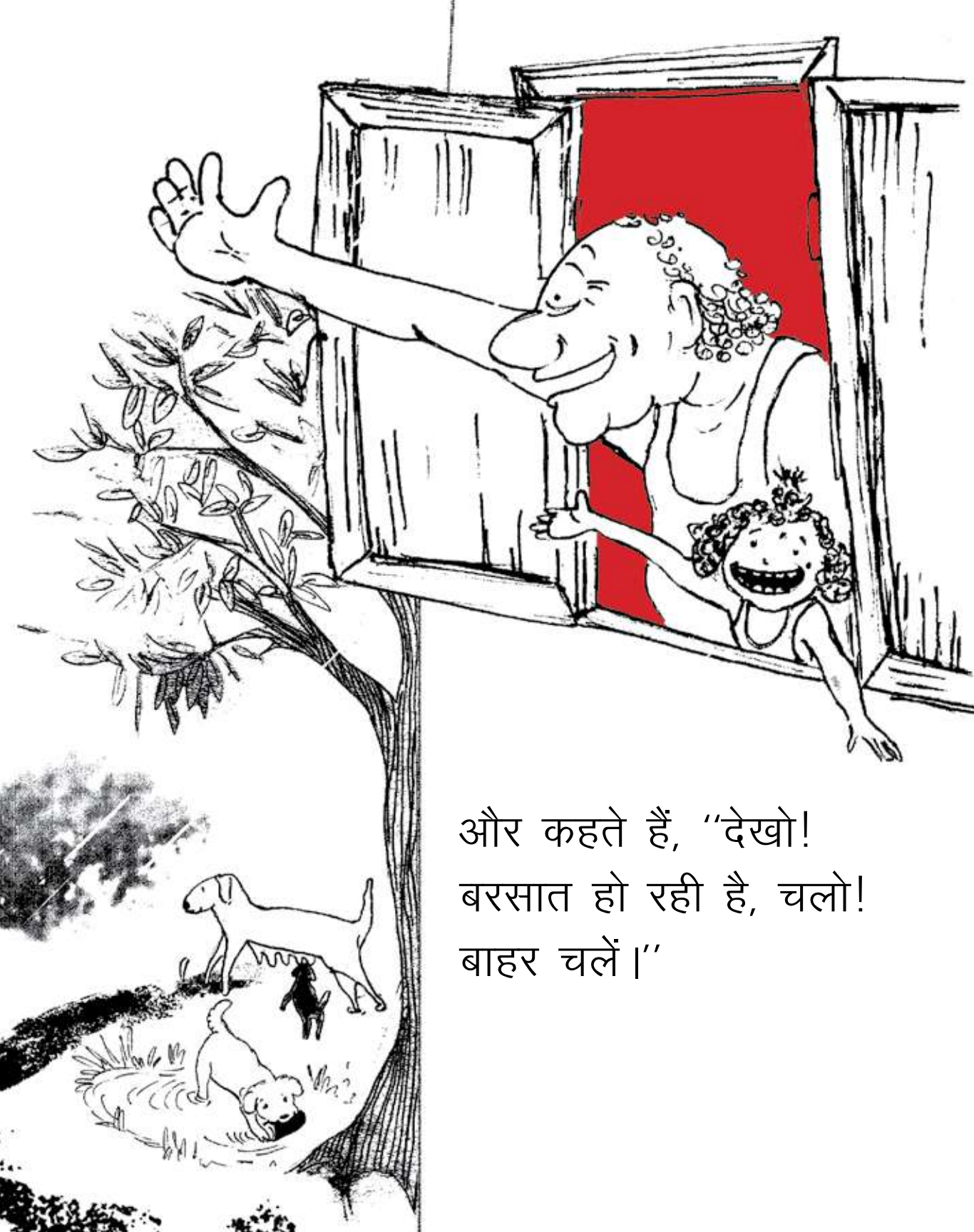
“थाथू क्यों न हम चाँद  
पर चलें?” मैं पूछती हूँ।

वे सिर हिलाकर हँस देते हैं।

थाथा के दाँत नहीं हैं। जब वे हँसते हैं तो  
एक गुलाबी-सी दीवार दिखाई देती है...  
और फिर... एक गुलाबी-सी गुफ़ा।



जब बारिश होती है, तो  
थाथा खिड़की के बाहर  
इशारा करते हैं।



और कहते हैं, “देखो!  
बरसात हो रही है, चलो!  
बाहर चलें।”



थाथू और मैं हमेशा कुछ  
अलग करते हैं।